

## स्वच्छता, स्वास्थ्य और विकास में अन्तर्सम्बन्ध का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ प्रज्ञा तिवारी  
असिंग्रो प्रोग्राम विभाग

भारतीय प्रधानमन्त्री ने 2 अक्टूबर 2014 को राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की। उन्होंने स्वयं अस्सी घाट पर झाड़ू लगा कर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। स्वच्छ वातावरण व रहन-सहन व्यक्ति के स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव डालता है। स्वच्छ वातावरण से व्यक्ति को मानसिक प्रसन्नता की अनुभूति होती है और स्वच्छता से व्यक्ति तमाम संक्रामक बीमारियों से मुक्त रहता है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप राष्ट्र के लिए उत्पादन में अपना भरपूर योगदान दे पाता है जिससे देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता है। यही कारण है कि प्रधानमन्त्री के नेतृत्व में केन्द्र सरकार स्वच्छता के लिए राष्ट्रीय अभियान चला रही है। स्वच्छता किसी भी देश के स्वस्थ मानव संसाधन के लिए अत्यन्त जरूरी चीजों में से एक है और स्वस्थ मानव संसाधन ही राष्ट्र के विकास की गति तय करता है। इसलिए महात्मा गांधी ने भी अपने विकसित भारत के सपने के लिए स्वच्छता को आवश्यक माना था और उनका मानना था कि देश में सभी को स्वच्छता की शिक्षा देना सबसे जरूरी है।

स्वच्छता और पोषण स्वास्थ्य के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व हैं। संतुलित खान-पान के साथ स्वच्छता स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है। स्वच्छता अप्रत्यक्ष रूप से स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ मामला है। इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यक है क्योंकि गंदगी से कई बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। स्वच्छता विकास का अकेला सबसे लाभकारी परिणाम है। विश्व बैंक के जल एवं स्वच्छता

कार्यक्रम का अनुमान है कि स्वच्छता पर एक डॉलर खर्च करने से स्वास्थ्य, शिक्षा और अर्थिक विकास में 9 डॉलर की बचत होती है। बच्चों के विकास में बाधक समस्याओं पेचिश, कुपोषण, शारीरिक विकास संबंधी कमजोरियों की जड़ में साफ सफाई की कमी है।

महात्मा गांधी ने हमेशा स्वच्छता पर बहुत जोर दिया। उनका कहना था कि 'स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।' गांधी की पूरी दिनचर्या स्वच्छता पर आधारित थी उनके आश्रम में रहने वाले सभी खी-पुरुष स्वच्छता के जीवन को अपनाते थे। खुद अपने हाथों से साफ-सफाई करना गांधी और उनके अनुयायियों के लिए जीवन शैली भर नहीं थी बल्कि यही जीवन था। राजकोट में जब प्लेग की महामारी फैली तो गांधी को लगा कि यह चुप बैठने का समय नहीं है और सफाई अभियान चलाकर ही इस महामारी से लड़ा जा सकता है। महात्मा गांधी ने ऐसे अभियान में शामिल होने के लिए स्थानीय सरकार को बाकायदा चिट्ठी लिखी। राजकोट में ही नहीं दक्षिण अफ्रीका के डरबन प्रवास के समय भी जब प्लेग फैला तो वह इस नतीजे पर पहुँचे कि भारतीय लोगों की सफाई का ध्यान न रखने की आदत उनकी बस्तियों में इसके फैलने का एक कारण है। वहाँ वह सफाई अभियान में शामिल भी हुए।

एक तरफ जहा विकसित देशों के लोगों को बेहतर स्वच्छता सुविधाएं प्राप्त हैं। तो वहीं विकासशील देशों में बेहतर स्वच्छता सुविधाओं का घोर अभाव है। इस मामले में भारत की स्थिति शर्मनाक है। वैश्विक औसत 62 प्रतिशत की तुलना में

भारत में केवल 34 प्रतिशत जनसंख्या को ही बेहतर स्वच्छता सुविधाएं उपलब्ध है। भारत में तो 30 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण आबादी की साफ पेयजल तक कोई पहुँच नहीं है अथवा आंशिक पहुँच है। स्वच्छता के अभाव की भी ऐसी ही गंभीर स्थिति है। संयुक्त राष्ट्र के एक अध्ययन के अनुसार भारत में शौचालयों की तुलना में मोबाइल तक ज्यादा लोगों की पहुँच है। ऐसा अनुमान है कि भारत में 597 मिलियन लोग खुले में शौच करते हैं जो दुनियाभर में खुले में शौच का आधे से अधिक है। ग्रामीण भारत में खुले में शौच सबसे बड़ी समस्या है, ऐसा अनुमान है कि भारत के गाँवों में प्रत्येक दस में से एक मौत का संबंध खराब साफ-सफाई और स्वच्छता से है और इन मौतों के काफी हिस्से के लिए हैजा जिम्मेदार होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में साफ-सफाई के अभाव के कारण ही मच्छरजनित बीमारियों मलेरिया और फाइलेरिया से लोग अक्सर पीड़ित होते हैं। ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता संबंधी अज्ञानता एक बड़ी समस्या है।

यूनिसेफ के आंकड़ों के अनुसार भारत में आजादी के तकरीबन 70 साल बाद, आज भी 60 करोड़ लोग यानी लगभग आधी आबादी खुले में शौच के लिए जाती है, हालांकि राहत की बात यह है कि इस बारे में उठाए गए कदमों की बजह से भारत में पिछले वर्षों में 30 प्रतिशत की कमी आई है, लेकिन निश्चय ही महिलाओं एवं बच्चियों द्वारा खुले में शौच करने की मजबूरी हमारे लिए बेहद शर्मिंदगी की बात है। आलम यह है कि अनेक गर्भवती महिलाएं, किशोरियां पेट भर खाना महज इसलिए नहीं खाती हैं क्योंकि बक्त-बेवक्त शौच जाने जैसी बुनियादी सुविधा उन्हें हासिल नहीं है। नतीजतन गर्भवती माताओं के गर्भ में पल रहा बच्चा तक कुपोषण का शिकार हो जाता है। इस समस्या के कारण किशोरियां भी कुपोषण व अन्य बीमारियों की शिकार हो जाती हैं और फिर महिलाएं अगर साफ सुधरे माहौल में बच्चे को जन्म देंगी, उसका पालन करेंगी तो अपने साथ देश की भावी पीढ़ी को भी उज्ज्वल भविष्य देंगी और राष्ट्र को मजबूती देंगी। विकसित राष्ट्र के सपने के पूरा होने के लिए ऐसा

होना आवश्यक है क्योंकि बेहतर स्वच्छता सुविधाओं से महिला सशक्तिकरण को बल मिलेगा जो किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य शर्त है।

खुले में शौच की समस्या और इससे होने वाली बीमारियों से कमोबेश सभी विकासशील देश जु़ङ्ग रहे हैं, लेकिन यह एक दुखद तथ्य है कि पूरी दुनिया में सर्वाधिक लोग भारत यानी अपने देश में ही शौचालय न होने के कारण खुले में शौच करते हैं। 2011 की जनगणना के मुताबिक देश भर में 53 प्रतिशत घरों में आज भी शौचालय नहीं है। ग्रामीण इलाकों के 69.3 प्रतिशत घरों में शौचालय नहीं है। खुले में शौच के चलते देर सारी बीमारियां हमारे देशवासियों को अपनी गिरफ्त में लेती जा रही हैं। आसानी से टाली जा सकने वाली डायरिया जैसी बीमारी का सबसे अहम कारण खुले में शौच है और सिर्फ इसके कारण 5 साल से कम उम्र के तकरीबन 563 बच्चे हर दिन काल के गाल में समा जाते हैं। ग्रामीण भारत में एक बड़ा तबका गंदगी और साफ पेयजल उपलब्ध न होने की बजह से बीमारियों की गिरफ्त में आ जाता है। ऐसे में स्वास्थ्य के लिए सफाई और स्वच्छ पेयजल के महत्व को देखते हुए सरकार ने सभी को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने का संकल्प लिया है और 2030 तक हर घर जल का लक्ष्य तय किया है तथा स्वच्छ भारत मिशन के तहत देश को 2 अक्टूबर 2019 तक खुले में शौच से मुक्त करने का संकल्प सरकार ने लिया है। दिसम्बर 2016 में सरकार ने 'स्वच्छ स्वस्थ सर्वत्र' कार्यक्रम शुरू किया है ताकि बेहतर स्वच्छता एवं ज्यादा जागरूकता और स्वस्थ जीवन शैली के जरिये बेहतर स्वास्थ्य का लक्ष्य हासिल किया जा सके।

स्वच्छता एवं सफाई का व्यक्तित्व के विकास पर व्यापक असर पड़ता है, खासतौर पर किशोरावस्था में। किशोरावस्था में बच्चों के व्यक्तित्व विकास एवं उनके जीवन में हो रहे बदलावों के बीच स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता एवं सफाई का व्यापक महत्व है। स्वच्छता व विकास का घनिष्ठ अंतर्सम्बन्ध इससे भी स्पष्ट होता

है कि यदि किसी समूह में या खासतौर से किसी कक्षा में किशोर-किशोरियों या बच्चों से इस बात की चर्चा की जाए कि किनके घरों में शौचालय है एवं किनके परिवार के लोग शौच के लिए बाहर जाते हैं, तो बच्चों या किशोर-किशोरियों के व्यक्तित्व में साफ अंतर दिखाई पड़ेगा।

किसी भी देश के विकास के लिए यह जरूरी है कि वहाँ के लोग स्वस्थ हों। यह इस बात पर भी निभर करता है कि सरकारें स्वास्थ्य सुविधाओं की ओर कितना ध्यान दे रही हैं। विकसित देश अपनी जी0डी0पी0 का एक बड़ा हिस्सा स्वास्थ्य सुविधाओं पर खर्च करते हैं जबकि विकासशील देशों में इस पर अपेक्षाकृत बहुत कम व्यय किया जाता है। हम स्वास्थ्य सुविधाओं पर अपने व्यय की अन्य देशों द्वारा किए जाने वाले व्यय से तुलना करके भी एक स्पष्ट तस्वीर प्राप्त कर सकते हैं। भारत अपने जी0डी0पी0 का 1.4 प्रतिशत स्वास्थ्य पर खर्च करता है जबकि फ्रांस 10.4 प्रतिशत और जापान 8 प्रतिशत व्यय करता है। विश्व स्वास्थ्य सूचकांक में शामिल कुल 188 देशों के बीच भारत 143वें पायदान पर है। भारत में स्वास्थ्य सुविधाओं पर प्रति व्यक्ति व्यय 40 डॉलर है जबकि अमेरिका में यह 7265 डॉलर, इंग्लैण्ड में 3567 डॉलर, चीन में 108 डॉलर, ब्राजील में 608 डॉलर और वैश्विक 802 डॉलर है। अपने देश में स्वास्थ्य सुविधाओं की दशा का आकलन इस तथ्य से भी किया जा सकता है कि हमारे लगभग 70 प्रतिशत चिकित्सक शहरों में रहते हैं जबकि 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। भारत में स्वास्थ्य पर निजी व्यय 86 प्रतिशत है, जबकि विश्व औसत 69.1 प्रतिशत है। स्वास्थ्य सुविधाओं सम्बन्धीय आकड़े हमारे तेज विकास के सपने पर आधात पहुंचाने वाले हैं।

### निष्कर्ष

स्वच्छता, स्वास्थ्य और विकास में अप्रत्यक्ष किन्तु अत्यन्त घनिष्ठ अंतरसम्बन्ध है। स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपरिहार्य कारक है और अच्छा स्वास्थ्य खुद के विकास तथा राष्ट्र व समाज के

विकास के लिए अपरिहार्यकारी कारक है। विकसित देश व समाज में स्वच्छता में के प्रति जागरूकता दिखाई देती है तो विकासशील देश व समाज में इसके प्रति लापरवाह रखेया दिखता है जो उनके जनस्वास्थ्य एवं विकास में बड़े अंतर के लिए जिम्मेदार होता है। यही कारण है कि विश्व के शीर्ष साफ शहरों में अधिकतर विकसित देशों के शहर ही स्थान बना पाते हैं। अतः विकास की गति तेज रखनी है तो स्वच्छता सुविधाओं के साथ-साथ स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं पर होने वाले व्यय को और बढ़ाना होगा इसके अतिरिक्त जनसामान्य के लिए स्वच्छता की शिक्षा के साथ स्वास्थ्य शिक्षा पर और अधिक बल देने की महती आवश्यकता है। भारत में भले ही स्वच्छ भारत अभियान जोर-शोर से चलाया जा रहा है लेकिन गंदगी की तस्वीरें दहला देने वाली ही हैं। कूड़े के ढेर पर शहरों की नींव रखी जा रही है, जो बारिश और तेज हवा के झोंकों में केवल बीमारी ही पैदा करेगी, ऐसे में स्मार्ट सिटी और विकसित भारत की कल्पना करना बेर्डमानी ही होगी। देश भर में खासकर शहरों में कचरा प्रबन्धन और निस्तारण की ठोस योजना बनाई जानी चाहिए। हाथ में झाड़ू लेकर सफाई के नाम पर केवल फोटो खिचवाने से कुछ नहीं होने वाला।

### सन्दर्भ

ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम व वी0 पोनराज़: ‘परिवर्तन की रूपरेखा’, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2014

योजना, हिन्दी मासिक, फरवरी 2014

कुरुक्षेत्र हिन्दी मासिक, जनवरी 2016

कुरुक्षेत्र, हिन्दी मासिक, जुलाई 2017

मूदुला सिन्हा: ‘देश को स्वच्छ बनाने का यह अधूरा संकल्प, हिन्दुस्तान, हिन्दी दैनिक, वाराणसी, 2 अक्टूबर 2015

हिन्दुस्तान, हिन्दी दैनिक, वाराणसी, 11 दिसम्बर 2017